ISSN : 2320–1274

जनवरी–फरवरी 2021
मूल्य : 50 रुपये

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

नववर्ष अंक

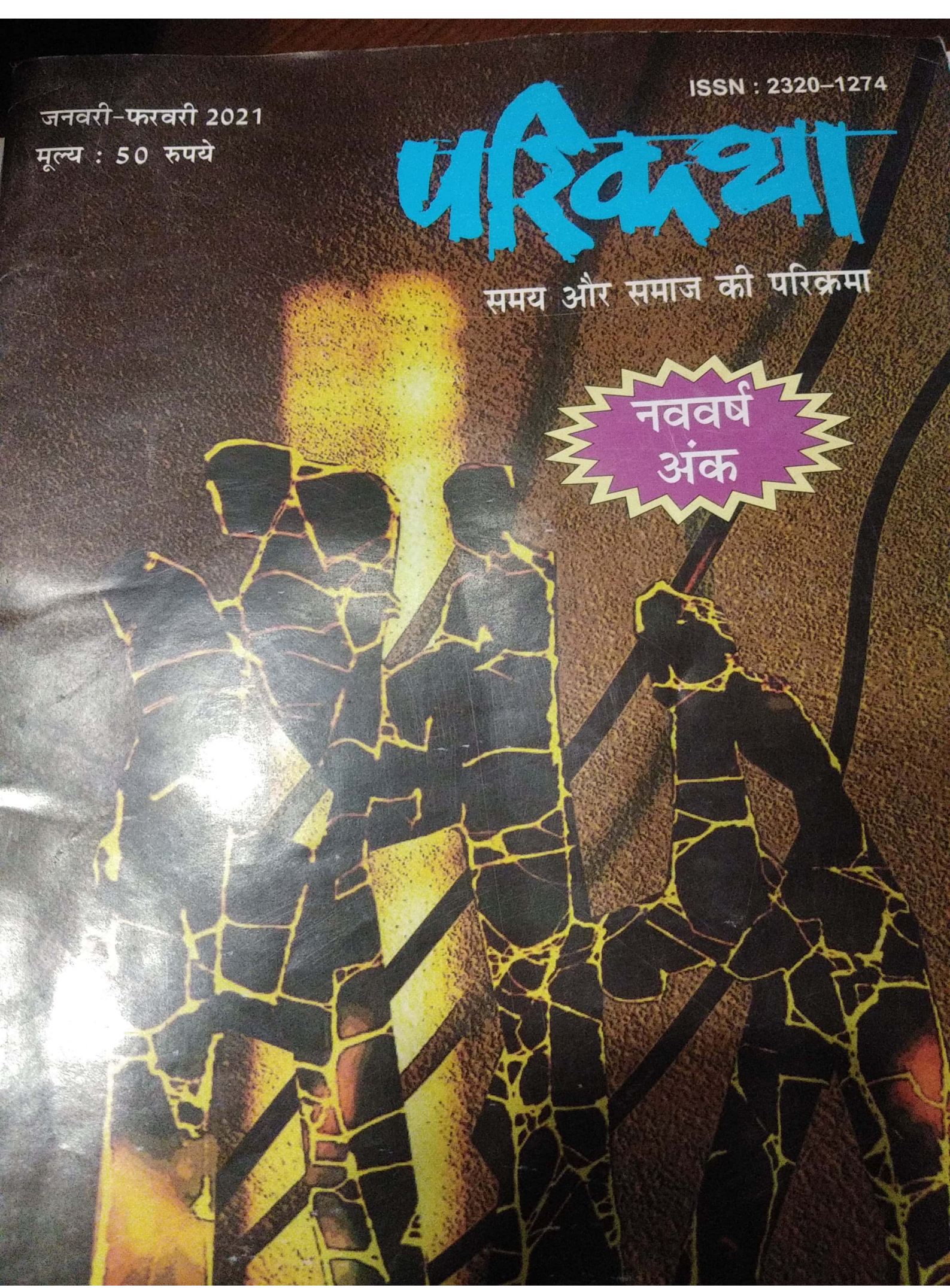

Scanned with CamScanner

कहानियाँ

डालर	तरसेम गुजराल	51
मोबाइल	हरियश राय	53
चांडाल	अशोक शाह	58
दाह	राजेन्द्र लहरिया	62
योद्धा	मुकुल जोशी	70
जेब में फूल	संजय कुमार सिंह	74
चलो, घर चलें	सरिता कुमारी	78
माटी का राग	प्रज्ञा	82
धुंआ है न शोला	पूनम सिंह	91
शक्ति-मंत्र	श्रद्धा थवाईत	96
मदारी	सत्येंद्र प्रसाद श्रीवास्तव	103
धारावी स्पेशल श्रमिक ट्रेन	जहीर कुरेशी	109
गणितज्ञ	पंकज स्वामी	113
एक कब्र की दूरी	फरजाना मेंहदी	116

चौपाल

करनटीन	नर्मदेश्वर	120

कविताएँ

तालाबंदी में माँ	केवल गोस्वामी	124
सुन रहा हूँ	सुभाष राय	124
कल आयेंगे हमारे कवि	नरेन्द्र पुण्डरीक	126
इस एक देश में कितने देश हैं भाई!	अशोक सिंह	127
लय	अनवर शमीम	130
बिदा होती बेटियाँ	सुजाता कुमारी	130
पिता जी की घड़ी	नरेश अग्रवाल	131
मूर्तियाँ	जावेद आलम खान	132

नवलेखन

कुदरत रूठ गई हमसे	अनिरुद्ध	133

किताब

अपनी ही राख से पुर्नसृजित होने का स्वप्न	प्रज्ञा	135

कथायात्रा

हाल फिलहाल की कहानियाँ	हरियश राय	139

Scanned with CamScanner

किताब

प्रज्ञा

अपनी ही राख से पुर्नसृजित होने का स्वप्न

अग्निलीक (उपन्यास)
लेखक : हृषीकेश सुलभ
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन
दरियागंज, दिल्ली
मूल्य : 250/-

प्रेम शब्द जितना सुखद और रूप, रस, गंध, श्रवण, स्पर्श से भरा हुआ है उतना ही वह मनुष्य के भीतर मनुष्यता को बचाए रखने का संभवत: अंतिम कोना भी होता है। पर प्रेम का इतिहास इस बात की गवाही नहीं देता। मानव मन का सबसे कोमलतम भाव मानव समाज के सबसे क्रूर प्रहारों का केंद्र बनता ...हत्याएँ, आत्महत्याएँ और जघन्यतम अपराध की वेदी पर प्रेम को अनेक बार जलते,

होते फिर अपनी ही राख से एक नए
में उठ खड़े होते भी देखा गया
...निक्स की तरह। जो जलता तो है
...ट नहीं होता। जो बुझता तो है पर
...ा रहता है। जो नफरत की कठोर
... के बीच अंकुर की तरह फूटता
...और समाज की बर्बर मनुष्य विरोधी
... को चुनौती देता बार-बार खड़ा
... कभी यहाँ, कभी वहाँ। कभी इस
...में, कभी उस अंचल में। कभी
...में, कभी इस युग में। कभी इस
...ो कभी उस देश में। कई बार
... कि प्रेम करने वालों की मिट्टी
... ही होती है। ये माटी कबीर की
...रे भुइँ' धरे वाले रूप और
...प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि
...ै धावनी है'-शब्दों की रगत
...ा रंग-रूप वाले जैसे आग को
... रखते हैं और मुस्कुराते हैं। पार
... डूब जाते हैं। उनके जलने से
...ती और अधिक पवित्र और
...निय और अधिक चमकीली

होती चलती है। उसकी चमक से और-और प्रेम करने वाले उसकी ओर बढ़े चले आते हैं। वरिष्ठ नाटककार-कथाकार ऋषीकेश सुलभ का पहला उपन्यास 'अग्निलीक' प्रेम के पक्ष और स्त्री जीवन की अंतर्लय को उसके सामाजिक-सांस्कृतिक- राजनीतिक-आर्थिक स्तर पर ठोस रूप में पकड़ता है।

प्रेम की इसी चमक और आकर्षण के कारण उपन्यास में जसोदा और उसकी चौथी पीढ़ी की रेवती कब समय के अंतराल को पारकर एक-दूसरे में घुलमिल जाती हैं यह पता ही नहीं चलता। जसोदा जैसे रेवती हो जाती है पर रेवती को जसोदा से भी अधिक क्रूरताओं का सामना करना पड़ता है। समय की भूमि पर भौतिक विकास की रेखाएँ अवश्य दृढ़ होती हैं। शक्ति, सम्पन्नता, ऐश्वर्य, वर्चस्व सभी जसोदा की स्थितियों से आगे बढ़कर रेवती की पीढ़ी देखती है पर स्त्री जीवन में प्रेम की सहज लीक बना पाना, उसे समग्रता में जीना चौथी पीढ़ी में भी असंभव जान पड़ता है। सवाल उठता है कि आजादी के कुछ समय पहले के वर्षों और इक्कीसवीं सदी के सोलह वर्ष बीतने के बाद भी जातिगत पूर्वाग्रह, धार्मिक जड़ताएँ, स्त्री की पराधीनता न सिर्फ पूर्ववत बनी हुई है बल्कि उसकी स्थितियाँ और अधिक जटिल क्योंकर हुई हैं? स्त्री के लिए शिक्षा के रास्ते भले ही सुगम और कुछ लचीले हुए हैं पर खुदमुख्तारी के रास्ते आज भी कंटकित हैं। इसलिए उपन्यास स्त्री के संदर्भ में एक ऐतिहासिक जड़ता और स्त्री पराधीनता की लीक को भी सामने लाता है।

बिहार के अंचल को सुलभ अपनी कहानियों-नाटकों में गहराई से सामने लाते रहे हैं। वास्तव में रचनाकार अपने परिवेश से ही यथार्थ का लोक चुनता और रचता है। ऋषीकेश सुलभ का बहुचर्चित नाटक 'अमली' हो या फिर उनकी कहानी 'अग्नि जो लागी नीर में'-उनके पाठकों को 'अग्निलीक' पढ़ते हुए दोनों का स्मरण हो आना सहज, स्वाभाविक है। एक तरफ सामंती व्यवस्था में पिसती अमली की दारुण कहानी है तो दूसरी ओर सामंती-पूँजीवादी दुश्चक्र में सताई जा रही माधुरी देवी है। एक परिस्थितियों की शिकार है तो दूसरी परिस्थितियों से लोहा लेती हुई उस नारकीय तंत्र को अपने साहस से भेदती है। उसका निजी प्रतिशोध सामने आता है। 'अग्नि जो लागी